मोहनदास ऐसे बने महात्मा...!

- ऋषभ राज सिंह,
छात्र, जनसंचार

'खुद को पाने का सबसे अच्छा तरीका है, खुद को दूसरों की सेवा में खो दो।' गांधी की यही बातें - उन्हें औरों से अलग करती हैं। आज के इस परिदृश्य में संपर्क की नई-नई तकनीक उपलब्ध हैं। मनुष्य पलक झपकते ही बड़े जलसैलाब से मीलों दूर किसी भी स्थान पर बैठकर सीधे संपर्क साध सकता है। तकनीक है, लेकिन आज ऐसा एक भी जनप्रिय शख्स नहीं है, जिसकी राष्ट्रपिता महात्मा गांधी से तुलना की जा सके। एंड्रॉइड और स्मार्ट फोन के जमाने में ट्विटर, फेसबुक और इंस्टाग्राम जैसे मीडिया साधनों पर तथाकथित फॉलोअर्स तो नजर आते हैं, लेकिन अनेक महत्वपूर्ण अवसरों पर उनका समर्थन जुटा पाना संभव नहीं हो पाता।

इस डिजिटल युग में भी एक ओर जहां नेताओं का समर्थन किसी खास जाति, धर्म, क्षेत्र और बोली तक ही सीमित है, वहीं दूसरी ओर तार और चिट्ठी-पत्री के युग में भी गांधी का जनसंपर्क देशभर में था। हिन्दू ,मुस्लिम, सिख-ईसाई हांे या फिर बिहारी, गुजराती, बंगाली, मराठी - भारत का हर नागरिक बापू के एक आह्वान पर उठ खड़ा होता था। बापू ने उन्हें मिलने वाले जनसमर्थन को आजादी हासिल करने का मुख्य हथियार बनाया था। बापू की अगुवाई में 200 वर्षों से गुलाम भारत को आजादी मिली थी। सत्य और अहिंसा के मार्ग पर चलते हुए अंग्रेजी हुकूमत को अपने सत्याग्रह के जरिए घुटने टेकने पर मजबूर कर दिया था।

गांधी जी एक जनमान्य नेता थे, उन्हें जनसमर्थन हासिल था। यह समर्थन उन्हें उनके जनसंपर्क के कारण ही प्राप्त था। उनका मानना था कि सत्य बिना जनसमर्थन के भी खड़ा रह सकता है - क्योंकि वह आत्मनिर्भर है। लेकिन क्या यह सम्भव है कि सत्य को जनसमर्थन न हासिल हो? जनसमर्थन का ही जादू था जो गांधी जी बेहद विनम्रता से दुनिया बदलने का माद्दा रखते थे। गांधी जी ने सर्वप्रथम अपने संपर्क के माध्यम से दक्षिण अफ्रीका में जनसमर्थन हासिल किया था। उन्होंने वहां भारतीयों पर हो रहे अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाई और तत्कालीन स्थानीय सरकार द्वारा जारी किए गए भारतीय जनता के पंजीकरण में आपत्तिजनक अध्यादेश का विरोध किया। उन्होंने वहां मौजूद लोगों को एकजुट कर रंगभेद की नीति के खिलाफ लड़ाई लड़ी और कई बार जेल जाने के बाद सफल भी हुए। बापू का कहना था कि एक अच्छा इंसान हर सजीव का मित्र होता है और यही बात उन्हें खास बनाती थी। सभी लोगों से वे मित्रता का भाव रखते हुए 'वसुधैव कुटुम्बकम' की आवाज को बुलंद किया करते थे। समूची मानव जाति के विकास, कल्याण और उत्थान की बातें करते थे। गांधी जी दक्षिण अफ्रीका से वापस लौटने के बाद देश के कौने-कौने में गए और लगभग चार वर्षों तक भारतवर्ष में भ्रमण कर लोगों के हाल जानने की कोशिश की। साथ ही उनकी समस्याओं का निदान करने के ठोस विकल्पों के बारे में भी चिंतन करते रहे। भारत आने पर जहां उनका जोरदार स्वागत किया गया। असली भारत को जानने के लिए वे तीसरे दर्जे के रेलवे डिब्बों का चयन किया करते थे। भारत की आत्मा तक इस यात्रा ने उन्हें पहुंचाया। अंतिम पंक्ति के अंतिम व्यक्ति की जीवनशैली को नजदीक से इस यात्रा की बदौलत ही उन्होंने जाना और पहचाना।

जनसंपर्क के दौरान एक बार जब उनसे पूछा गया कि क्या वह हिन्दू हैं, उनका जवाब था 'हां मैं हिन्दू हूं। मैं एक ईसाई, मुस्लिम, बौद्ध और यहूदी भी हूं। यह था उनके मानवता के प्रति लगाव। उनके यही विचार जनचेतना लाने में कारगर सिद्ध हुए थे। जनसंपर्क के दौरान गांधी जी ने पाया कि समाज के हालात बेहद निराशाजनक हैं। उन्होंने समझा कि भारत के लोगों में आपसी भाईचारे, समानता, समावेश, सम्मान और सशक्तिकरण की अत्यधिक

आवश्यकता है ताकि देश को मौजूदा उपनिवेशवाद से बचाने के लिए जनता को एकजुट किया जा सके। समाज में मौजूद जाति, धर्म, क्षेत्र और भाषा के नाम पर भेदभाव को खत्म करने के लिए उन्होंने कठिन परिश्रम व साधना की। समाज में पल रहे छुआ-छूत की परंपरा को नष्ट करने के लिए बापू ने अछूतों को हरिजन (हरि का जन) शब्द से अलंकृत किया। अछूतों को समाज में सम्मान व बराबरी दिलवाने के लिए गांधी ने देश के हर कौने में जाकर जनसंपर्क साधा और लोगों को जागरूक किया। इसके साथ ही उन्हें आपसी मतभेदों से ऊपर उठकर उपनिवेशवाद के खिलाफ संघर्ष में एकजुट होने के लिए प्रेरित किया।

गांधी द्वारा सत्य और अहिंसा के रास्ते जनकल्याण के लिए किए गए कुछ महत्वपूर्ण आंदोलन निम्नलिखित हैं, जिन्हें न सिर्फ व्यापक जनसमर्थन मिला, बल्कि इतिहास में सदा के लिए अंकित हो गए।

चंपारण सत्याग्रह (1917) : गांधी जी का यह सत्याग्रह, उनकी ओर से स्वतंत्रता संग्राम का पहला व्यापक आंदोलन था। किसानों पर महंगी फसलें उपजाने के दबाव और उनके उचित मूल्य न देने के विरोध में चंपारण सत्याग्रह किया गया था। इस संग्राम के सफल होने के परिणामस्वरूप उन्हें महात्मा की उपाधि दी गयी थी।

खिलाफत आंदोलन (1919) : यह मुस्लिमों का आंदोलन था जिसमें तुर्की के खलीफा को पुनः स्थापित करने की मांग को लेकर गांधी ने उनका नेतृत्व किया। यह आंदोलन इस बात को दर्शाता है कि उनके जनसंपर्क का असर हर धर्म, हर तबके के लोगों पर था।

असहयोग आंदोलन (1920-1922): रॉलेट सत्याग्रह की सफलता के बाद गांधी जी ने असहयोग आंदोलन की शुरुआत की, जिसमें लोगों से आग्रह किया गया कि वे स्कूलों, कॉलेजों और न्यायालय न जाएँ तथा कर न चुकाएँ। संक्षेप में सभी को अंग्रेजी सरकार के साथ सभी संबंधों के परित्याग का पालन करने को कहा गया। सरकारी आँकड़ों के मुताबिक 1921 में 396 हड़तालें हुई जिनमें 6 लाख श्रमिक शामिल हुए और इससे 70 लाख कार्यदिवसों का नुकसान भी हुआ था।

भारत छोड़ो आंदोलन (1942): दूसरे विश्व युद्ध के बाद गांधी जी ने अंग्रेजों को भारत से भगाने के लिए इस आंदोलन की शुरुआत की। इसी आंदोलन में उन्होंने करो या मरो का नारा भी दिया। इस आंदोलन में पूरे देश के लोगों ने भाग लिया, नतीजन अंग्रेजी हुकूमत को यह एहसास हो गया कि अब भारत में उनके आखिरी दिन ही बचे हैं।

लोगों में नीची जातियों के खिलाफ नफरत और द्वेष को खत्म करने और उनमें मानवता के भाव जगाने के क्रम में महात्मा गांधी ने बिहार में आई प्राकृतिक विपदा के दौरान जनता को संबोधित करते हुए कहा था की यह संकट तो सिर्फ शरीर को नाश करने वाला है, किंतु अस्पृश्यता से जन्मा संकट हमारी आत्मा नष्ट कर रहा है। इसलिए हमें इस विपत्ति से सीख लेना चाहिए और सांसों के शेष रहते हमें अस्पृश्यता के इस कलंक से मुक्ति पाकर अपने आपको सृजनहार के समक्ष स्वच्छ हृदय लेकर उपस्थित होने योग्य बना लेना चाहिए। गांधी जी कहते थे 'खुद वह बदलाव करें, जो आप दुनिया में देखना चाहते हैं।' और अपनी इस बात पर वे ताउम्र अमल करते रहे। शूद्र के हाथों से खाना हो या फिर खुद अपने मलकक्ष साफ करना हो - ये तमाम चीजें बताती हैं कि गांधी जी जो बदलाव समाज में चाहते थे, सर्वप्रथम उसे अपने ऊपर लागू करते थे।

अंग्रेजी हुकूमत के विरुद्ध सत्याग्रह के दौरान उन्हें कई बार जेल जाना पड़ा तथा उनके कई साथियों को जान गंवानी पड़ी, उस दौर के बारे में गांधी जी कहते हैं, 'जब कभी भी मैं निराश होता हूं, मैं याद करता हूं कि समस्त इतिहास के दौरान सत्य और प्रेम की ही हमेशा विजय होती है। कितने हीं तानाशाह और हत्यारे हुए हैं, कुछ समय के लिए वो अजेय लग सकते हैं, लेकिन अंत में उनका पतन ही होता है। क्योंकि भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि आप आज क्या कर रहे हैं।'

महात्मा गांधी का जनसंपर्क एक अदभुत और अप्रीतम कीर्तिमान साबित हुआ है। उनके संपर्क और समर्थन का लोहा दुनियाभर में माना जाता है, नतीजन दुनिया के हर कोने में उनकी प्रतिमा, उनके नाम के स्मारक, संग्रहालय व पुस्तकालय मौजूद है। यहाँ तक कि संयुक्त राष्ट्र महासभा के द्वारा उनके जन्मदिवस को अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस मनाने का घोषणा की गई है। राष्ट्र के प्रति उनके प्रेम और देशवासियों की ओर से उन्हें सम्मान देने के लिए सुभाषचंद्र बोस ने उन्हें राष्ट्रपिता कहकर बुलाया, वहीं उनके जनसंपर्क और जनसमर्थन को देखते हुए महान वैज्ञानिक आइंस्टीन ने उनके बारे में कहा कि, हजार साल बाद आने वाली नस्लें इस बात पर मुश्किल से विश्वास करेंगी कि हाड़-मांस से बना कोई ऐसा इंसान भी धरती पर आया था। व्यक्ति अपने विचारों से निर्मित प्राणी है, वह जो सोचता है वही बन जाता है - वर्तमान परिदृश्य में गांधी जी की कही ये बातें बिल्कुल सटीक बैठती है।

(प्रस्तुति: मनुज फीचर सर्विस)

नोट: मनुज फीचर सर्विस में छपे लेखों के विचार लेखक के अपने हैं। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। यहां प्रकाशित सामग्री का उपयोग गैर व्यावसायिक कार्यों के लिए करने हेतु किसी अनुमति की आवश्यकता नहीं है। मनुज फीचर सर्विस का उल्लेख अवश्य करें।